सत्यमेव जयते

# वातायन

## वर्ष 2017-18

## (अक्टूबर 2017 से मार्च 2018)

अंक: 95 अवधि - छमाही

राजभाषा की सेवा में

कार्यालय - प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)

ओड़िशा, भुवनेश्वर

**मुख पृष्ठ : श्री जगन्नाथ मंदिर, पुरी**

# वातायन पत्रिका परिवार

## संरक्षक

**श्रीमती मधुमिता बसु**

**प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) ओड़िशा, भुवनेश्वर**

**प्रकाशन एवं मार्गदर्शन समिति**

**श्री ए के जोशी**

**वरिष्ठ उपमहालेखाकार (प्रशासन)**

**श्री मसरूर अहमद** डॉ. नंद दुलाल दास

**उपमहालेखाकार (लेखा)उपमहालेखाकार (पेंशन)**

**संपादक**

श्री रबीन्द्र नाथ चाँद

हिन्दी अधिकारी

**सहयोग**

श्री सुन्दर लाल साव, कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक

श्री राजेश कुमार कटरे, कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक

कुमारी बबिता मणि, कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक

**पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं रचनाकारों के व्यक्तिगत विचार व भावनाएं हैं कार्यालय व संपादक मंडल का रचनाकारों के विचारों से सहमत होना आवश्यक नहीं है।**

## प्रधान महालेखाकार का संदेश

हमारे कार्यालय की राजभाषा पत्रिका वातायन का 95 वां अंक प्रकाशित हो रहा है यह जानकर मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है। राजभाषा हिंन्दी के प्रचार-प्रसार के लिए हिंन्दी पत्रिका का अत्यंत सराहनीय योगदान रहता है। कार्यालय में काम करने वाले अधिकारियों एवं कर्मचारियों को अपने मन के भावों को हिंन्दी में लिखकर व्यक्त करने के लिए यह पत्रिका एक सशक्त माध्यम है।

मैं पत्रिका के साथ जुड़े इस कार्यालय के सभी लेखकों का अभिनंदन करती हूं एवं आशा करती हूं कि वे आगे भी इसी तरह से हिंन्दी में लिखते रहेंगे एवं कार्यालयीन काम-काज में हिंन्दी का हर संभव प्रयोग करते रहेंगे।

अंत में मैं पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की कामना करती हूं एवं संपादक मंडल को सफल संपादक के लिए धन्यवाद देती हूं।

मधुमिता बसु
प्रधान महालेखाकार

## संदेश

मुझे प्रसन्नता है कि हमारे कार्यालय से छ:माही राजभाषा गृह पत्रिका "वातायन" का 95वां अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। इस पत्रिका के माध्यम से हमारे कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने अपनी साहित्यिक प्रतिभा का प्रमाण देने का प्रयास किया है। हमारे कार्यालय के जिन अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने ईमानदारीपूर्वक कार्य करते हुए अपनी साहित्यिक प्रतिभा का परिचय दिया है वे सभी बधाई के पात्र हैं। वर्तमान समय में हिन्दी भाषा मानवीय विकास एवं प्रगति में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रही है। इसलिए इस पत्रिका के माध्यम से हम हिन्दी के अधिक से अधिक प्रयोग करने के साथ ही राजभाषा एवं देश की संस्कृति का प्रचार का पूर्ण प्रयास करते हैं।

मैं आशा करता हूँ कि हमारे कार्यालय में हिंदी के प्रति जो लगाव है वो दिनों-दिन और बढ़ेगा तथा राजभाषा पत्रिका वातायन के प्रचार-प्रसार में इसी प्रकार समस्त स्टाफ सदस्यों की भागीदारी बनी रहेगी।

पत्रिका के उज्जवल भविष्य की कामना करते हुए सभी रचनाकारों तथा सम्पादक मण्डल को अनेकानेक शुभकामनाएँ।

ए.के.जोशी

वरिष्ठ उपमहालेखाकार (प्रशासन)

# संपादकीय

प्रिय पाठकगण,

आपके समक्ष राजभाषा छ:माही गृह पत्रिका "वातायन" का 95वां अंक प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यंत हर्ष हो रहा है। हम जानते हैं कि भारत एक बहुभाषी देश है। यहां अनेक भाषाएँ बोली जाती हैं। सभी को अपनी-अपनी भाषा के प्रति गहरा लगाव होता है। सभी भाषाओं की अपनी अलग-अलग मर्यादापूर्ण पहचान होती है परंतु हमारे संविधान में हिंदी को राजभाषा का दर्जा प्रदान किया गया है। लेकिन वर्तमान में हिंदी का प्रयोग कार्यालयीन कामकाज तथा व्यवहारिक रुप में जितना प्रयोग होना चाहिए शायद उतना नहीं हो रहा है। इसके पीछे मुख्य कारण यह है कि लोग हिंन्दी से अधिक अंग्रेजी को महत्व देते हैं।

हिन्दी भाषा देश की सामाजिक परम्पराओं, सभ्यताओं तथा साहित्यिक उपलब्धियों को सहेज कर रखने का एक अनोखा माध्यम है। जैसे हम राष्ट्रध्वज और राष्ट्रगान का सम्मान करते हैं उसी तरह हमें हिन्दी को राजभाषा होने के नाते सम्मान देना चाहिए।

राष्ट्र को अन्तर्राष्ट्रीय मंच पर हिन्दी भाषा के माध्यम से समृद्ध तथा सशक्त बनाने के लिए हम सबको तन मन से एक अभियान चलाना होगा। पिछले कई वर्षों से हमारे कार्यालय में अपने साथियों को हिन्दी भाषा के प्रति उत्साहित करने के लिए पत्रिका प्रकाशन में सृजनात्मक रचना लिखने हेतु प्रेरित कर रहे हैं जो काफी हद तक सफल भी हो रहा है। कुल मिलाकर इस पत्रिका के प्रकाशन का उद्देश्य कार्यालयीन कामकाज के लिए राजभाषा का प्रचार-प्रसार करना है।

समस्त सुधी पाठकों से मेरा पुन: नम्र निवेदन है कि यह अंक आपको कैसा लगा कृपया अपनी प्रतिक्रियाएं अवश्य भेजें तथा इस पत्रिका को और अधिक आकर्षक बनाने हेतु अपने सुझाव प्रेषित करें।

रबीन्द्र नाथ चाँद

संपादक

# वातायन

## अनुक्रमणिका


| क्रसं | | |
|---|---|---|
| 1 | प्रधान महालेखाकार का संदेश | |
| 2 | वरिष्ठ उपमहालेखाकार प्रशासन का संदेश | |
| 3 | संपादकीय | |

**गद्य विभाग**

| क्रसं | रचना | रचनाकार | पृष्ठ |
|---|---|---|---|
| 1 | सामान्य भविष्य निधि : ऑनलाइन सुबिधा | श्री गौरीरंजन मिश्र | 7 |
| 2 | गरीबी | सुश्री सोनी कुमारी साव | 8 |
| 3 | सोशल मिडिया | सुश्री सोनी कुमारी साव | 9 |
| 4 | मोबाईल फोन : महत्व, दुष्प्रभाव एवं बचाव | श्री आलोक कुमार | 11 |
| 5 | भारतीयता में स्ववालंबन जरुरी | श्री राजेश कुमार कटरे | 13 |
| 6 | मोर्चे पर मोची | श्री अभिषेक कुमार | 16 |
| 7 | कहानी एक नारी की | सुश्री शांतिलता सेठी | 18 |
| 8 | भारतीय अर्थव्यवस्था | श्री सुंदरलाल साव | 21 |
| 9 | अति सर्वत्र बर्जयेत | सुश्री पी पुष्पलता | 22 |
| 10 | नारी की सृजनशीलता | सुश्री वीणापाणि महांति | 23 |
| 11 | ऊटी : यात्रा वृतांत | श्री चार ओराम | 24 |

**पद्य विभाग**

| क्रसं | रचना | रचनाकार | पृष्ठ |
|---|---|---|---|
| 1 | श्रृद्धा मार्ग | श्री रबिन्द्र नाथ चाँद | 26 |
| 2 | साथी | श्री सुकांत कुमार महांति | 27 |
| 3 | रिश्तों का महत्व | श्री बीर किशोर जेना | 27 |
| 4 | तन्हाई/ मेरा शिक्षक मेरा रक्षक | सुश्री निधि गर्ग | 28 |
| 5 | पेड़ | श्री सरोज कुमार परिडा | 29 |
| 6 | भारत एक सच्चाई | श्री रवि कुमार | 30 |
| 7 | आधुनिक मानव | सुश्री बबिता मणि | 31 |
| 8 | लड़कियाँ | श्री संजीव कुमार दुबे | 32 |
| 9 | प्रकृति | सुश्री पिंकी गुर्लिआ | 33 |
| 10 | नारी का त्याग | सुश्री बासंती सामंतराय | 34 |
| 11 | पापा आप हो खास | सुश्री सस्मिता सोरेन | 35 |

**विविधा**

| | | |
|---|---|---|
| 1 | कार्यालय समाचार | 36 |
| 2 | राजभाषा गतिविधियाँ | 39 |
| 3 | कल्याण विभाग की गतिविधियाँ | 40 |
| 4 | पाठकों की पाती | 42 |

# सामान्य भविष्य निधि की ऑनलाइन सुविधा

**श्री गौरी रंजन मिश्र,**
**वरिष्ठ लेखा अधिकारी**

**प्रधान महालेखाकार (लेखा व हक), ओडिशा के कार्यालय में सामान्य भविष्य निधि अंशदाताओं को वेबसाइट पर मिलने वाली सुविधाएँ**

सामान्य भविष्य निधि के इ-स्टेटमेंट कार्यालय की वेबसाइट पर अपलोड करने की नई सुविधा अक्टूबर 2013 से संचालित की गई है। यह सुविधा लेने के लिए सा.भ.नि. अंशदाता को स्वयं की जन्म तिथी और मोबाईल नंबर के साथ पंजीकरण कराना है। पंजीकृत अंशदाताओं को जब भी आवश्यकता हो अपना सा.भ.नि. का ई-स्टेटमेंट अपनी सहुलियत से देख/डाउनलोड/प्रिंट कर सकते हैं। ऐसे मामले में जब अंशदाता आँनलाईन स्टेटमेंट प्राप्त करने में असमर्थ होते हैं तो उनके संबंधित डी.डी.ओ. से डी.डी.ओ. लॉगिन एवं पासवर्ड के प्रयोग द्वारा डाउनलोड कर सकते है। अंशदाता वेबसाइट पर सा.भ.नि. से संबंधित शिकायत भी दर्ज कर सकते हैं जिसका जवाब यदि ई-मेल का पता उपलब्ध है तो इ-मेल पर अन्यथा उनके संबंधित डी.डी.ओ. के माध्यम से डाक द्वारा दिया जाता है। सा.भ.नि. के ई-स्टेटमेंट के चलन में आने के बाद से मुद्रित सा.भ.नि. स्टेटमेंट जारी करना बंद कर दिया गया है जिससे प्रतिवर्ष कार्यालय का डाक एवं स्टेशनरी संबंधी लाखों रुपयों की बचत हो रही है।

वर्ष 2013 से पुश एसएमएस सुविधा भी संचालित कर दी गई है। पंजीकृत अंशदाताओं को प्रतिमाह उनके खाते में अंशदान जमा, आहरण तथा बकाया के संबंध में एसएमएस भेजे जा रहे हैं।

वर्ष 2015 से उन अंशदाताओं को जो अगले चार माह में सेवानिवृत्त हो रहे हैं उन्हें समय पर सा.भ.नि. बकाया का अंतिम भुगतान के लिए अग्रिम आवेदन भेजने हेतु एसएमएस भेजे जा रहे हैं।

अंशदाता उनके द्वारा प्रस्तुत किए गए अंतिम भुगतान आवेदन की स्थिति का पता भी वेबसाईट के माध्यम से लगा सकते हैं।

जिन अंशदाताओं के अंतिम भुगतान प्राधिकृत होते हैं उनकी माहवार सूची पत्र संख्या, दिनांक एवं डाक संदर्भ के साथ कार्यालय की वेबसाईट पर प्रदर्शित की जा रही है।

अगले छ: महीने में सेवानिवृत्त होने वाले अंशदाताओं की सूची भी कार्यालय की वेबसाईट पर उपलब्ध कराई जा रही है।

कार्यालय अपने लाभार्थियों को सुविधाएँ प्रदान करने के लिए लगातार पूर्णत: प्रयास कर रहा है।

# गरीबी

(१)

सुश्री सोनी कुमारी साव,
डीईओ

भारत की बहुत सारी समस्याओं में से एक सबसे बड़ी समस्या गरीबी है। कई लोग तो रोजगार न मिलने पर भीख माँगते हैं। भारत में 20 राज्यों की औसत गरीबी राष्ट्रीय औसत से कम है तथा भारत के कुछ राज्यों में भारत की कुल गरीबी औसत से ज्यादा है। भारत के कुछ राज्यों में भारत की कुल गरीबी का औसतन 75% है। प्रतिशत में गरीबी (योजना आयोग की रिर्पोट के अनुसार छत्तीसगढ़ झारखण्ड, मणिपुर, अरुणाँचल प्रदेश, बिहार, मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश, महाराष्ट्र, उत्तर पश्चिम बंगाल राज्यों में कृषि का विकास नहीं हुआ है। इन राज्यों में आधारभूत संरचानाओं का अभाव है। यहाँ लघु एवं कुटीर उद्योगों की कमी है और इसी कारण से इन राज्यों मे विस्थापन, नक्सलवाद आदि जैसे संकट की समस्या पायी जाती है। दूसरी तरफ पंजाब, हरियाणा, गुजरात जैसे राज्य जिन्होने कृषि को अपनी विकास योजना का प्रमुख हिस्सा बनाया वहाँ भारत की कुल गरीबी का लगभग 2% के लगभग है तथा नक्सलवाद जैसी समस्याएँ भी नही है। भारत में ग्रामीण गरीबी की मुख्य स्थिति कृषि में उत्पादकता का अभाव, मूलभूत संरचनात्मक सुविधाओं का अभाव न्यूनतम कृषि मजदूरी के कारण उत्पन्न हुई है। इसलिए जिन राज्यों में कृषि विकास दर तीव्र है और कृषि मजदूरी दर अधिक है, उन राज्यों में गरीबी का स्तर अत्यंत निम्न है। अगर भारत में गरीबी दर इतनी बढ़ रही है तो भारत की उन्नति कैसे सम्भव हो पाएगी। कहा जाता है कि इन्टरनेट से जुड़े एक तरफ लोग नई तकनिकियों की बात करते हैं, नई मशीने बना रहे हैं वहीं दूसरी तरफ कुछ लोग गरीबी की रेखा में पिस रहे है। जिसे हम देखकर भी अनदेखा कर रहें हैं और कुछ भी नहीं लेकिन इस प्रकार हम अगर गरीबों को अनदेखा करेंगें तो बाकी विकसित देश हमारे इस भारत को अनदेखा कर देगें। इसलिए हमें गरीबी की समस्या का निपटान सरकार के साथ मिलकर करना होगा।

# सोशल मिडिया

(२)

1969 में जब इन्टरनेट का प्रचलन शुरु हुआ तो अविष्कृत विज्ञान यंत्रों और आवश्यक जानकारी को विश्व के सभी लोगों तक पहुँचाने का प्रयास था। धीरे-धीरे इन्टरनेट में प्रगति के साथ ही तकनिकी साधन प्रचलन में आए। सन् 2000 आते-आते इसी वर्ल्ड वाइड वेब के जरिए दुनिया में सोशल साइट्स अस्तित्व में आई। यदि हम सोशल साइट्स को परिभाषित करना चाहें तो यह वह आनलाईन साधन है जो एक सामाजिक नेटवर्क की तरह कार्य करता है तथा लोगों के बीच संबंध बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। अल्बर्ट आइंस्टीन ने अपने वक्त में ही कहा था कि ये इन्टरनेट Human Interaction बन जायेगा। भारत की सवा अरब जनसंख्या में लगभग 75 करोड़ लोगों की जेब में स्मार्टफोन है। 15.5 करोड़ लोग फेसबुक पर आते हैं और 16 करोड़ लोग व्हाट्सप पर रहते हैं। इन आकड़ों को देखें तो ये समझना मुश्किल नहीं है कि राजनैतिक पार्टियाँ आनलाइन कैपेन या कहे सोशल मिडिया के इस्तेमाल को तवोज्जो क्यों दे रही हैं? बीते कुछ सालों में चुनावों में सोशल मिडिया की भूमिका कितनी जरूरी हो गई है कि ये लैस प्रिंस अपनी किताब "द मोदी इफेक्ट" में बताते है कि मौजूदा प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी पहले ही समझ चुके थे कि लोगों तक सीधे पहुँचने के लिए सोशल मिडिया बेहद जरुरी है। उनके लिए ये केवल जुनून नहीं बल्कि उनकी जरूरत बन गई और साल 2014 में उनकी जीत के पीछे इसकी अहम भूमिका रही थी। 2014 के लोकसभा चुनावों में भाजपा ने जिस तरह के सोशल मिडिया का इस्तेमाल किया उसे देखकर फाईनेन्सियल टाइम्स ने मोदी जी को भारत का पहला सोशल मिडिया प्रधानमंत्री तक कह डाला था। मोदी जी ने भी चुनाव जीतने के बाद सोशल मिडिया की भूमिका को स्वीकार किया।

सोशल मिडिया का सबसे बड़ा फायदा यह है कि सोशल साइट्स की मदद से तत्काल सूचना प्रेषित की जा रही है। अपने दोस्तों और रिस्तेदारों को आनेवाले त्योहार, समारोह एवं आगामी पार्टियों के बारे में सूचना का आदान-प्रदान की जा सकती है। कई उपयोगकर्ता सोशल मिडिया पर समय गुजारते हैं लेकिन इसपर अत्यधिक और अनियंत्रित उपयोग गंभीर लत का कारण बन सकता है। इन्टरनेट का अत्यधिक उपयोग एकाग्रता को भंग करने में प्रमुख भूमिका निभा सकता है। सोशल नेटवर्किंग पर काम करते समय आप काम को एक दूसरे से बदल रहे हैं। एक ही काम पर ध्यान केन्द्रित करने से आपकी एकाग्रता की क्षमता कम हो जाती है। ऐसी

गतिविधियाँ आपके मस्तिष्क को शिथिल कर देती हैं। सोशल मिडिया में पहचान की चोरी, विवरण की चोरी, साइबर धोखेबाजी, हैकिंग और वायरस के हमले की संभावना को बढ़ावा देता है। यदि आपने पता, फोन नंबर, कार्यस्थल और अपने परिवार की जानकारी किसी भी सोशल मिडिया की साइट पर अपडेट किया है तो आपने अपनी गोपनीयता को खो दिया है। यह कहते हुए दु:ख भी होता है कि सोशल मिडिया के कारण हम किताब के महत्व को कम कर दिए हैं। जहाँ लोग अपने खाली समय में किताब (उपन्यास, निबंध, कविता आदि) पढ़ा करते थे वहीं यह अब खाली समय में फेसबुक और व्हाट्सप कर रहे हैं। हमें सोशल मिडिया का एक हद तक ही उपयोग करना चाहिए। इसे अपनी आदत न बनाकर केवल कार्य के समय ही इसे उपयोग में लाया जाए तो काफी अच्छा होगा। आजकल तो बच्चे भी आउटडोर गेम छोड़कर केवल मोबाइल में ही खेल रहे हैं। हमें सोशल मिडिया का उपयोग सावधानी एवं आवश्यकता पड़ने पर ही करना चाहिए।

# मोबाईल फोन: महत्व, दुष्प्रभाव एवं इससे बचाव

श्री आलोक कुमार,
डीईओ

आधुनिक युग में विज्ञान द्वारा अनेक आश्चर्यजनक अविष्कार किये गए हैं जिनमें मोबाईल फोन का महत्तव विशेष है। मोबाईल फोनका जिस तेजी से प्रसार हुआ है वह एक चमत्कारी घटना है। शुरुआत में मोबाईल फोन कुछ संपन्न लोगो तक ही सीमित था फिर व्यापार व्यवसाय में तथा उच्च सेवा करने वाले लोगों में इसका प्रचलन बढ़ा। सेवा प्रदाता कंपनियाँ भी कम थी जिससे सेवा शुल्क अधिक हुआ करता था। लेकिन आजकल सब बदल गया है। मोबाईल फोन सस्ते हो गए हैं। अब हर व्यक्ति के पास एक मोबाईल है। युवा पीढ़ी के कुछ लोगों में एक से ज्यादा फोन रखने का शौक है। जरुरत की बात करें तो इसका अविष्कार लोगों की कुछ परेशानियों को दूर करने के लिए किया गया था। इसकी मदद से हम कभी भी किसी से बात कर सकते हैं चाहे वो कितनी भी दूर हो। हम देश-विदेश में रहने वाले लोगों के संपर्क में रह सकते हैं। असाध्य रोगों की सूचना, विभिन्न प्रकार के समाचार सुनना, मनचाहे गाने सुनना, गेम्स खेलना, कैलकुलेटर आदि हर तरह की विषेशताओं से भरा है यह मोबाईल फोन। इससे अनेक लाभदायक एवं मनोरंजक कार्य किये जा सकते हैं। जैसा कि हम जानते हैं, हर वस्तु के अच्छे व बुरे दोनो पक्ष होते हैं।

मोबाईल फोन से भी हानियाँ हैं। या फिर यूँ कहें कि इसका दुरुपयोग करने से, गलत ढंग से इसका प्रयोग करने से इसकी हानियाँ हैं। छात्रों को मोबाईल गेमिंग की बुरी लत पढ़ने से उनपर दूरगामी दुष्प्रभाव पढ़ता है। अश्लील संदेश भेजकर भी कुछ लोग इसका दुरुपयोग कर रहे हैं। आजकल युवाओं में चैटिंग का नया रोग भी फैल गया है। इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता है कि वाह्ट्सअप,फेसबुक आदि के आने के बाद से लोग मोबाईल फोन के आदि हो चुकें हैं। वहीं यह बुरी आदतों में शुमार भी हो चुका है। सिर्फ वाह्टसअप चलाने तक जो कसर बाकी थी वह ग्रुप बनाकर उसमें अन्य लोगों को जोड़ने के बाद पूरी तरह खत्म हो गई। अब वाह्टसअप और फेसबुक पर सिंगल चैटिंग करने के साथ लोगों को ग्रुप में चैटिंग करना अधिक पसंद है। इन सभी नयी विशेषताओं के कारण लोग इसके आदि होते जा रहे हैं। इसस

युवा अपना काम-धाम छोड़कर इसी में लगे रहते हैं जिससे उनका सामाजिक जीवन बुरी तरह से प्रभावित हो रहा है। आजकल एक से ज्यादा ग्रुप चलाना स्मार्टफोन से धीरे-धीरे युवा पीढ़ी के जीवन का हिस्सा बनता जा रहा है। मोबाईल से घिरे होने के कारण ही वे "नोमोफोबिया" की बिमारी के करीब होते जा रहे हैं। कालेज से लेकर स्कूली बच्चों और हमारे रिश्तेदार सभी के ग्रुप बने रहते हैं। ऐसे में मोबाईल का आदि होना स्वभाविक है।

इससे हमें कई नुकसान है। जैसे कि बार-बार फोन देखने से हमारे काम करने की गुणवत्ता खत्म होती जा रही है। साथ ही हमारा ध्यान भी केंद्रित नहीं रह पाता। स्पष्ट शब्दों में कहें तो हमारी एकाग्रता भी धीरे-धीरे खत्म होती जाती है। इससे भी बढ़ा नुकसान तो हमारे स्वास्थ्य पर पढ़ता है। हमारी आँखों के साथ-साथ पूरे शरीर पर मोबाईल फोन से निकली रेडियो तरगों का बहुत बुरा असर पड़ता है।

इसलिए हमें इन बुरी आदतों से दूर रहना चाहिए। हो सके तो फोन देखने का एक निर्धारित समय बनाएँ। बाकि समय में खुद को काम करने में व्यस्त रखें। साथ ही काम करते वक्त एवं सोते समय फोन को अपने शरीर से दूर रखें तभी हम स्वस्थ रहकर अपने सामाजिक जीवन को खुशहाल रख सकते हैं।

# भारतीयता में स्वावलंबन जरुरी

**श्री राजेश कुमार कटरे**
**कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक**

भारत एक महान देश है। अति प्राचीन सभ्यता का वाहक, विशाल कालखंड, समन्वित भूखंड व समावेशी, तर्क-वितर्क के आधार पर निरंतर गतिशील विशाल व विविध जनसमूह को धारण करता है। विविधता में एकता की प्रकृति अति तार्किक सोच को अति संजीदगी से पोषित करती है। शायद दुनिया की यह एक मात्र संस्कृति या सोच है - हम भी सही और आप भी सही। सही को देखने के लिए एक से अधिक नजरिए हो सकते हैं और वे अलग-अलग परिपेक्ष्य में सही भी हो सकते हैं। इस सोचकी समृद्धि के लिए परम आवश्यक है। कोई भी संस्कृति या सोच कितनी भी तार्किक प्रभावी या मंगलकारी क्यों न हो यदि वह बलहीन है तो उसके नष्ट या समाप्त हो जाने का खतरा है। उसके लाभ से विश्व वंचित हो जाएगा जो भावी विश्व के लिए विध्वंसक व उत्पीड़क होगा। अत: भारत को जनकल्याण के लिए बहुत ही शक्तिशाली एवं रक्षा क्षेत्र में आत्म निर्भर होना आवश्यक है।

वर्तमान का नव साम्राज्यवाद भारत को निगल जाना चाहता है। ये शक्तियां सघन, सुनिश्चित व व्यापक सटीक चेष्टाएं कर रही हैं कि भारतीय लोगों में जाति, धर्म, स्थान या फिर और नये-नये तरीकों से वैमनस्य व शत्रुता पैदा कर दी जाए। जिससे वे परस्पर लड़-झगड़कर एक दूसरे की प्रगति के बाधक बनें और यदि संभव हो तो भारतीय भूखंड के छोटे-छोटे खंड कर दिए जाएं ताकि वृहद भारत विश्व के लिए चुनौती न रह जाए एवं इसकी प्राचीन संस्कृति भी मिट जाए और यह अमीर देशों पर पूरी तरह निर्भर हो जाए।

अरबियन देश या इसकी संस्कृति से प्रभावित देश भी भारत को अरब की संस्कृति को पूरी तरह तहस-नहस कर दिया जाए और भारत पर अरबी संस्कृति को पूरी तहर से थौप दिया जाए। यह एक जमीनी संस्कृति के विनाश और दूसरी प्रायोजित संस्कृति की स्थापना के लिए किया जा रहा सघन प्रयास संसाधनों पर स्वामित्व के लिए किए गए प्रयास से अनेकों गुना खतरनाक, दीर्घजीवी और विध्वंसक है। इसके लिए हमेशा खुले एवं छद्म युद्ध भी किए जा रहे हैं। कई प्रकार के

आतंकवाद का सहारा लिया जा रहा है। ये आतंक, विखंडित सोच या तात्कालिक आक्रोश के उत्पाद नहीं जान पड़ते बल्कि लगता है कि इनके पीछे कहीं सोची समझी नीति और सोच काम कर रही है। कुछ भी हो पूरी संभावना है कि अरबी संस्कृति भारतीय संस्कृति को पूरी तरह से निगल जाने के लिए आकुल एवं अनेक छल-बल सहित सचेष्ट है।

पश्चिमी और अरबी सभ्यता जब भारतीय सभ्यता को लगातार निगल रही है तो पड़ोसी चीन भी क्यों बैठा रहे। वह भी इस दौड़ में अपना हिस्सा हड़पने के लिए आकुल प्रतीत होता है। जितने सुनिश्चित व एकताबद्ध प्रयास मावोवादी या नक्सलवादी कर रहे हैं, जितने संसाधन एवं दु:साहस का प्रदर्शन वे कर रहे हैं इससे स्पष्ट होता है कि इसके पीछे भारत को तोड़ने वाली विदेशी शक्तियां, खासतौर पर चीन का हाथ हो सकता है। चीन सीमाओं पर सड़कें बना रहा है, हमारे जल संसाधन को नियंत्रित करने का प्रयास कर रहा है और जब चाहे हमारी सीमाओं में घुस आता है और धौंस दिखाता है। इन सब कार्यों से चीन की आस्तिन के सांप होने वाली सोच स्पष्ट दिखाई देती है।

विश्व की ये तीन महान सभ्यताएं पश्चिमी सभ्यता (क्रिश्चियन), अरबी (इस्लाम) एवं चीनी सभ्यता भारत और भारतीय सभ्यता को टुकड़े-टुकड़े करके पूरी तरह से निगल जाना चाहती हैं और उसके लिए छल, बल, भेद सहित सभी सभ्य-असभ्य साधनों का सुगठित प्रयास कर रही हैं। इनके आक्रमण (खुले एवं छद्म) से बचने का एक मात्र उपाय दिखाई पड़ता है कि हमारी सोच सुदृढ़ हो और हम रक्षा क्षेत्र में बलशाली एवं आत्मनिर्भर हों। हमें अपनी विभिन्नता में एकता की सोच (सह-अस्तित्व) को पूरे तर्क और संजीदगी के साथ विश्व के सामने रखने की आवश्यकता है और स्वयं इस विचार में पूरी तरह दृढ़ रहने की आवश्यकता है।

पश्चिमी सभ्यता पूरी तरह से क्रिश्चियन सोच से प्रभावित है जो पश्चिम की श्रेष्ठता और नियंत्रण में भरोसा करती है। ईश्वर प्रदत्त प्रकृति को मानवीय प्रजाति में संगभेद के आधार पर विभाजित करती है। ये सभ्यता समझती है कि गोरे लोग काले लोगों से श्रेष्ठ हैं। काले लोगों पर नियंत्रण करना और उन्हें क्रिश्चियन बनाना उनका दायित्व है। इस दायित्व निर्वाह के आदर्श की आड़ में पश्चिमी सभ्यता ने विश्व की न जाने कितनी सभ्यताओं और जातियों को बल या छल पूर्वक नेस्तनाबूत कर दिया है या फिर उनका शोषण किया है। उनके साम्राज्य और प्राकृतिक संसाधनों पर कब्जा किया है। अमेरिकन व आस्ट्रेलियन को किस निर्ममता और निर्लज्जता से मिटा दिया गया, अफ्रीकन्स के साथ कैसा पाश्विक व्यवहार किया गया - इतिहास इस बात का साक्षी है। प्रजाति या जन्म के आधार पर श्रेष्ठता का एवं दूसरों पर नियंत्रण या उन्हें बरबाद करने का विचार अत्यंत ही अवांछनीय, अतार्किक और विध्वंसक है।

जिस प्रकार अमेरिकन जीवनशैली या विश्व स्तर के लिए आदर्श बना हुआ है यदि दुनिया के सभी लोगों ने उसी स्तर पर जीने की गहरी तमन्ना पैदा कर ली तो शायद ही विश्व के संसाधन पूरी मानवता का बोझ ढोने के लिए पर्याप्त होंगे। इस प्रकार प्राकृतिक संसाधनों की कमी से विश्व में बड़ा तनाव पैदा होने की संभावना है, जो ये दिन ज्यादा दूर नहीं हैं।

पश्चिमी एवं अरबी सभ्यता में पल रही पूरी दुनिया को अपने आगोश में समेट लेने की तथा बिपरीत विचारों व लोगों को पूरी तरह से नष्ट कर देने की प्रचण्ड दैवीय कामना, प्राकृतिक संसाधनों पर नियंत्रण करने की चेष्टा और भी तीव्र होती जा रही है। मानवाधिकार एवं सशक्तिकरण के नाम पर आंतरिक विद्वेष फैलाकर, आतंकवाद, माओवाद, नक्सलवाद, नव उपनिवेशवाद या फिर बौद्धिक उपनिवेशवाद के माध्यम से भारत को खण्डित कर देने के सुगठित प्रयास हो रहे हैं।

इन सभी विपरीत व दु:साध्य परिस्थितियों के निराकरण उपाय यही है, कि भारत अपनी गृह एकता को सुदृढ करे। दुनिया को सह-अस्तित्व का पाठ पढ़ाए, उन्हें बताए कि वैश्विक स्तर पर विचारों का सम्मान करें जिससे नीतिगत सोच के क्षेत्र में उर्वरता बनी रहे जो मानवता के विकास व कल्याण के लिए आवश्यक है। अपना अस्तित्व बनाए रखने के लिए, भारतीय संस्कृति को बचाए रखने के लिए यह अनिवार्य है कि भारत रक्षा क्षेत्र में बलशाली हो तथा आत्मनिर्भर हो क्योंकि मुश्किल समय में आयात पर भरोसा नहीं किया जा सकता। भारत एक महान देश है जिसकी सह-अस्तित्व में, तर्क-वितर्क में, पारस्परिक सम्मान में, गतिशीलता में भरोसा करने वाली अति पुरातन संस्कृति है। भारत के पास विशाल प्राकृतिक संसाधन, मधुर जलवायु एवं सामरिक भौतिक एवं भौगोलिकि स्थिति है। इन सब विशेषताओं व संपदाओं को बचाए रखने के लिए तथा विश्व को समावेशी संस्कृति का उपदेश व अवसर देने के लिए भारत को सशक्त व सक्षम होना आत्म मंगल एवं विश्व मंगल के लिए परमावश्यक है।

# मोर्चे पर मोची

श्री अभिषेक कुमार,
डीईओ

वह लोगों के पैरों को आशा भरी नजरों से देखता है फिर चेहरे की ओर और कभी-कभी तो केवल नजरों की ओर। अजीब विडंबना है न! हाँ हो भी क्यों न ? उसकी रोजी पैरों में पहने जाने वाले जूतें चप्पलों से ही जुड़ी है। हाँ, वह एक मोची है।

मुझे महालेखाकार कार्यालय में कार्य करते हुए चार साल हो गये हैं। इन चार सालों में मेरा ध्यान प्राय: उस मोची पर चला जाता है जो कार्यालय के मुख्य द्वार से 50 मीटर की दूरी पर सड़क के किनारे बैठता है। वह करीब 60 साल का है। दुबला-पतला शरीर, मलीन वस्त्र, सफेद हो चुके बाल और राहगीरों को ताकती उसकी थकी हुई सी आँखें इत्यादि विशेषताओं से उसे अलंकृत किया जा सकता है।

कभी-कभी मैं उसके यहाँ जूता पालिश करवाने जाता हूँ तो उससे बातें भी हो जाती है। बातों ही बातों में मै उससे पूछता हूँ कि आप इस उम्र में भी यह काम करते हैं। क्या घर में कोई कमाने वाला नही है ? लड़के हैं और पेट पालने लायक कमा भी लेते हैं पर अगर मैं उनके भरोसे घर पर बैठ जाऊंगा तो शरीर ज्यादा दिन तक स्वस्थ नहीं रहेगा और जब शरीर चल रहा है तो कुछ न कुछ काम करते रहना ही ठीक है जिससे कुछ पैसा भी कमा लेता हूँ। आगे वह कहता है कि गरीबी के कारण वह पढ़ लिख तो नहीं सका पर जो काम आता है वही ठीक से करने की कोशिश करता हूँ। ऐसा कहते हुए उसकी बातों से आत्मविश्वास की खुश्बू आ रही थी। फिर उसने कहा कि जब तक जीवित हूँ ईश्वर न करें की किसी का मोहताज होना पड़े। उसकी इन बातों में आत्मसम्मान का ओज था। फिर मैंने उससे हँसी-मजाक में पूछा कि अच्छा आपको सरकारी दफ्तर में नौकरी करने का मन तो करता होगा। तो उसने तुरन्त ही कहा कि अच्छी नौकरी करने का मन तो सबका करता है पर सब अच्छी नौकरी तो नहीं पाते हैं। उसकी इस बात में दार्शनिक भाव था और तल्ख टिप्पणी भी। मैंने तुरन्त पूछा कि आपको क्या लगता है कि सरकारी दफ्तरों में काम नहीं होता है ? वह मुस्कुराते हुए कहता है कि बाबू साहब हम तो दफ्तर गये भी नही हैं पर उम्र का अनुभव भी तो कोई चीज होती है न

और मैं किसी पे आरोप नहीं लगा रहा हूँ। मेरा तो उन लोगों के बारे में कहना है कि जो ऊँची तनख्वाह लेते हैं और दिन भर कामचोरी करते हैं। हँसी तो तब आती है जब उनकी कामचोरी उन्हें दिन प्रतिदिन खाए जाती है और उन्हें इस बात की भनक भी नहीं लगती है।

जब पढ़े लिखे अपने स्वास्थ के प्रति लापरवाही दिखाते है तो बड़ा आश्चर्य होता है और लगता है कि अच्छा है मैं पढ़ा-लिखा नहीं हूँ। वह कहता है कि बड़े-बड़े लोगो में बीमारी भी बड़ी-बड़ी होती है। जैसे - हार्ट अटैक, बीपी, शुगर और न जाने क्या-क्या। लोग इतने आराम पसन्द हो गए हैं कि पेट कब छाती की पहरेदारी करने लगता है पता ही नहीं चलता। मजदूर कम से कम स्वस्थ तो रहते है।

पढ़-लिखकर भी कुछ लोग अनपढ़ रह जाते है न! उनकी बातों में दाशर्निक झलक थी और उम्र का अनुभव तो था ही। वह काफी मन लगाकर काम करता है और हाँ वह आत्मनिर्भर है उस उम्र में भी जब लोग खुद को रिटायर्ड समझने लगते हैं। कम से कम वह अपनी गरीबी की आड़ में भीख तो नहीं मांगता है। वह जिन्दगी के मोर्चे पर डटकर खड़ा है और जो भी काम वह जानता है बड़ी ईमानदारी से करता है। वह उन लोगों से बेहतर है जो पढ़े - लिखे होने पर भी अपना दायित्व नहीं समझते हैं।

# कहानी एक नारी की

सुश्री शान्तिलता सेठी,
वरिष्ठ लेखाकार

दूरर्शन में एक लड़की अपने पिताजी के बारे में जो कुछ बोल रही थी सुनकर मैं हैरान रह गई थी। दो बेटियों को छोड़कर एक बेटा को लेकर पिताजी भाग गए। दो बेटियों की शादी में दहेज नहीं दे सकेंगे इसलिए वह अपनी पत्नी का साथ छोड़ दिया।

ऐसी ही एक घटना मेरे गाँव में हुई थी तब मैं बारह साल की थी। एक दिन सुबह दो बजे लक्ष्मी चाची रोते रोते हमारे घर आई। मैंने मां को बुलाया और चाची को मेरे घर के अंदर ले गई। मेरे पिताजी और माँ दोनों चाची को रोने का कारण पूछे। लक्ष्मी चाची बोली - "(वह उनके पति राम) रात में घर छोड़ कर भाग गया। मां ने बोली - क्यों दोनों के बीच कुछ हुआ था। चाची ने मना की और बोली - बड़ी बेटी का रिश्ता आया है। उनके पास तो कुछ नहीं है जो जमीन थी उसे गिरवी रख कर बड़ा बेटा को पढ़ा रहा है। शादी कैसे करवाएंगे वही बात को ले कर कुछ बात हुई और इतने बच्चे पैदा करने के लिए कौन बोला था। इसी बात को लेकर वह बोले - मैं घर छोड़ कर चला जाऊंगा।"

माँ ने बोली बस इतनी सी बात। चाची ने बोली - हां बेटा बेटी में बहुत भेदभाव कर रहे हैं। बेटी सिर्फ सोलह साल की है। उसको पढ़ने का बहुत शौक है। मैट्रिक पास करने के बाद अठारह साल की हो जाएगी तब शादी की बात सोचेंगे। लेकिन वह दहेज से डर कर चालीस साल की उम्र के एक आदमी के साथ रिश्ता जोड़ रहे हैं। उनकी पत्नी अगले साल बच्चा पैदा करते वक्त मर गई और उनका एक बच्चा है। इसी कारण उनके साथ आठ दिन से दोनों के बीच अनबन चल रहा था। इसका मतलब यह नहीं कि घर छोड़ कर चले जाए।

पिताजी ने बोले - ठीक है शाम तक अपेक्षा कीजिए, नहीं आप तो हम उन्हें ढुढेंगे। कहाँ जाएगा। चाची ने बोली - एक आदमी चंदन उनसे मिलने के लिए बार बार आ रहा था। वह शादी का रिश्ता लेकर आया था मैंने साफ मना कर दी उन्हीं के साथ जरूर गया होगा। पिताजी बोले कितने दिन रहेगा। मेरी माँ ने चाची को बोली - दस बच्चे पैदा करते वक्त सोचना चाहिए कि कैसे उनकी जरूरत पूरा करेंगे। घर में कुछ नहीं है जमीन बेच कर अच्छा अच्छा खाना

खाए। और जब बच्चे बड़े हुए तो छोड़ कर चले गए। लक्ष्मी चाची ने बोली - मैंने कितने बार मना किया नहीं माने और मुझे समझाने लगे उन्हें संसार में आना चाहिए भगवान सब ठीक करेंगे। यह बोल कर चाची रोने लगी।

एक महीना ऐसे बीत गया। रोज सुबह शाम चाची के रोने की आवाज सुनने मिलती थी। बड़े बेटे का स्कूल भी बंद हो गया था। मेरे पिताजी किसी का दुख नहीं देख सकते हैं। उन्होंने गांव के सभी लोगों को बैठाए और लक्ष्मी चाची की कैसे मदद की जा सकती थी इसका उपाय निकाले। गाँव के मुखिया ने लक्ष्मी चाची की जमीन लौटा देने का निर्णय लिए और विद्यालय में उनके सभी बच्चों की फीस माफ करवा दी गई।

लक्ष्मी चाची ने जैसे-तैसे काम करके अपने बेटे को पढ़ाया और सारी बेटियों की शादी करवा दी। बड़ा बेटा एक सरकारी दफ्तर में नौकरी करने लगा। भगवान की कृपा, गाँव के लोगों की मदद और अपने मनोबल से सभी बच्चों को एक उम्मीद का रास्ता दिखाई। अब सारे बच्चे खुश हैं। घर में अहिस्ता अहिस्ता आर्थिक हालत सुधरने लगी। तब से रामू काका की कोई खबर नहीं मिली।

एक दिन ग्यारह बजे एक टेलिग्राम मिला एम्स अस्पताल तुरंत पहुंचिए। मैं जीना चाहता हूँ - रामप्रसाद बेहेरा। यह पढ़कर चाची का बड़ा बेटा बोला - तुम कहीं नहीं जाओगी हमारे पिताजी बचपन से मर चुके हैं। यह बात सुनकर चाची ने मेरे पिताजी को बोली कुछ कीजिए मैं जाना चाहती हूं। मेरी माँ ने बोली ठीक है अपने बेटे को लेकर जाओ। चाची ने बोली कोई नहीं जाएंगे। माँ ने बोली कल मैं तुम्हारे बेटे को समझाऊंगी। अब जाइए खाना खाकर सो जाइए। चाची घर आ गई खाना खाई और सो गई लेकिन सुबह अपने बेटे को माँ माँ चिल्लाते हुए सुन कर मेरी माँ ने उन्हें पूछी माँ कहां गई होगी आ जाएगी। उनके बेटे ने बोला नहीं वह तो अपने अपने कपड़े और बी.पी.एल. कार्ड लेकर गई है।

उनके बड़े बेटे ने नौकरी किया और चार बेटे खेत में काम करते रहे हैं। उनके बड़े बेटे ने नौकरी किया और चार बेटे खेत में काम करते रहे हैं। चाची का बड़ा बेटा अपनी माँ को बहुत प्यार करता है। वह पागल जैसा हो गया, बोलने लगा - पिताजी बचपन में हमें छोड़ कर चले गए और जवानी में माँ हमें छोड़ कर चली गई। बच्चे कैसे पति - पत्नी के रिश्ते को समझ सकेंगे ? लक्ष्मी चाची अपने पति के लिए सावित्री व्रत करती थी। माथे पर भरा हुआ लाल सिंदूर और हाथ में लाल चूड़ियाँ अपने पति के लिए कितना प्यार दर्शाता है। वह खिड़की के पास बैठकर अपने पति का

इंतजार करती थी। अपने पति को देखने के लिए वह कैसे नही जाएगी।

दो दिन के बाद चाची ने अपने बेटे के पास फोन की और रामू काका के बारे में बताई। बेटे ने पैसे भेज दिए लेकिन चाची के पास नहीं आया। चाची ने अपना साहस जुटाई और बी.पी.एल. कार्ड की मदद से रामू चाचा का ईलाज करवाई। रामू चाचा को दुर्घटना में पूरे शरीर पर चोटें आई थी। लेकिन टाँग में जो हुआ था उसका ईलाज नहीं हो सका इसलिए एक टाँग काटना पड़ा। चाची ने अपने बेटों को समझाने की कोशिश की लेकिन कोई सुनने को तैयार नहीं थे। उसने किसी की बात नहीं सुनी और रामू काका को घर ले आई।

इस बात को लेकर बेटों के साथ तर्क-वितर्क हुआ। चाची ने बेटों से कहा तुम्हारी माँ होने से पहले मैं उनकी पत्नी हूँ जो भूल तुम्हारे पिता ने की है वह तुम मत करो। पिता ने मेरे साथ तुम लोगों को छोड़ दिया था मैं तब जवान थी काम करती थी। अब मैं भी बूढ़ी हो गई। अब मुझे सहारे की जरुरत है मेरे पति मेरे साथ इसी घर में रहेंगे तुम लोग चाहो तो मेरे पति को मेरे साथ छोड़कर जा सकते हो। यह सब सुनकर मेरी माँ एवं पिताजी ने उनके बच्चों को समझाए और बोले - नारी के कितने रुप होते हैं। वो पत्नी, माँ, बहन और कभी साक्षात माँ दुर्गा का रुप ले लेती है। इसलिए नारी सर्वदा पूजनीय है।

# भारतीय अर्थव्यवस्था

**श्री सुंदरलाल साव**
**कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक**

भारतीय अर्थव्यवस्था मिश्रित अर्थव्यवस्था के रुप में जानी जाती है, मिश्रित अर्थव्यवस्था क्या है यह जानना जरुरी है, वह अर्थव्यवस्था जिसमें सार्वजनिक क्षेत्र या सरकारी क्षेत्र एवं निजी क्षेत्र मिलकर जिस देश की राष्ट्रीय आय में भागीदार होते वह अर्थव्यवस्था मिश्रित अर्थव्यवस्था कही जाती है।

मुख्य रुप से तीन क्षेत्रो पर भारतीय अर्थव्यवस्था खड़ी है। 1) कृषि क्षेत्र 2) औधोगिक क्षेत्र 3) सेवा क्षेत्र, भारतीय अर्थव्यवस्था के अवयव है। हमारे देश में स्वतंत्रता से पहले लेजे फेअर अर्थव्यवस्था थी। जिसमें सरकार द्वारा सारी अर्थव्यवस्था की जिम्मेदारी रहती थी।

भारतीय अर्थव्यवस्था मे सुधार लाने एवं सुदृढ बनाने के लिए पंचवर्षीय योजना का प्रारम्भ किया गया। पंचवर्षीय योजना (1951-1956) - यह योजना 1951 से लेकर 1956 तक चली इस योजना के अध्यक्ष हमारे प्रथम प्रधानमंत्री पं जवाहर लाल नेहरु रहे। योजना आयोग का अध्यक्ष तत्कालीन प्रधानमंत्री ही होती है। यह आयोग सीधे प्रधानमंत्री को रिपोर्ट करती है। प्रथम पंचवर्षीय योजना का मुख्य लक्ष्य कृषि क्षेत्र में वृद्धि करना था, यह हेराड डोमर माँडल पर आधारित था। इस योजना का बजट रु 2069 करोड़ था बाद में यह बढ़ाकर 2378 करोड़ की गयी इस आयोग का जीडीपी विकास दर का लक्ष्य 2.1 रखा गया जबकि प्राप्त लक्ष्य 3.6 था जो 15 की वृद्दि रही। प्रथम पंचवर्षीय योजना के कारण भारतीय अर्थव्यवस्था में अदभुत सुधार आया।

हमारी अर्थव्यवस्था में द्वितीय योजना आयोग में औधोगिक विकास किया गया जिसमें दुर्गापुर भिलाई, राउरकेला, बोकारो बिट्रेन, रुस एवं जर्मनी की सहायता से की गयी।

इस योजना के अंतर्गत भाखड़ा नागल बांध, हीराकुंड, मेमेटुर, इसी समय आइ आई टी का प्रारम्भ किया गया कृषि के विकास के लिए किया गया। भारतीय अर्थव्यवस्ता में पंचवर्षीय योजना का योगदान महत्वपूर्ण रहा 1956 से लेकर 1961 तक दवितीय पंचवर्षीय योजना मे पब्लिक सेक्टर एवं उधोग पर जोर दिया गया। इसे महानवलिस माँडल भी कहा जाता है। 1961-1966 तक तृतीय योजना चली जो 1962 के और 1965 के युद्ध के कारण सफल नहीं रहा। तब अवकाश प्लान चलाया गया जो 1966-67, 1967-1968 एवं 1969 तक चली हमारे आर्थिक

विकास में महत्वपूर्ण योगदान चतुर्थ पंचवर्षीय योजना का रह जिसमें 14 बैंको का राष्ट्रीयकरण किया गया। इसके बाद 1978-1980 मे रोलिंग प्लान चलाया गया। इस प्रकार से वर्तमान समय मे 2014 तक 12 पंचवर्षीय योजना चलायी गयी।

एन डी ए सरकार के आने के बाद पंचवर्षीय योजना को डिसोलभ करके नीति आयोग का गठन किया जो अभी तक चल रही है।

# अति सर्वत्र वर्जयेत

**सुश्री पी. पुष्पलता,**
**वरिष्ठ लेखा आधिकारी**

मैं अपने लेख के माध्यम से वर्तमान समय में मनुष्य के अंदर से खत्म हो रही मनुष्यता को जगाने के लिए कई उदाहरणों को प्रस्तुत करना चाहती हूँ। मैनें अपने लेख का शीर्षक भी इसी आधार पर रखा है।

१) ज्यादा दान करने से सब कुछ खो गया बलि चक्रवर्ती

२) ज्यादा लोभ के कारण सब कुछ खो गया दुर्योधन

३) ज्यादा नाराज होने के कारण सब कुछ खो गया विश्वामित्र

४) काम की भावना कारण रावणासुर का पतन हो गया

आज का मनुष्य ज्यादा चाहने के कारण अपने अंदर का इंसानियत खो रहे हैं। अत: कहना चाहती हूं कि किसी भी चीज की इच्छा आवश्यकता अनुसार ही करना चाहिए अगर अति मतलब अधिकता होने से वह विष का ही काम करता है, हम यदि पुराने इतिहास को देखते हैं तो हम आज कर रहे गलतियों को रोक सकते हैं।

## श्री देवी का स्वर्गलोक में प्रभाव

सौंदर्य की देवी श्री देवी स्वर्ग पहुँच गयी, स्वर्ग में उपस्थित सभी लोग व अप्सराऐं उनकी सुंदरता को देखकर सब खुश हो गए व खुशियाँ मनाने लगे साथ ही साथ रम्भा उर्वशी, मेनका, तिलोत्रमा आदि की प्रतियोगिता एवं तुलना श्रीदेवी से होने लगी एवं प्रतियोगिता बन गयी। तमिलनाडु की मुख्यमंत्री जयललिता उनके आगमन से बहुत खुश हो गयी कि उनका एक दोस्त आ गयी, स्वर्ग लोक में मि.इंडिया वाला घड़ी वापस ले ली गयी की कहीं वह वापस भारत न चली जाएँ।

# नारी की सृजनशीलता

**सुश्री वीणा पाणि महांति**
**वरिष्ठ लेखाकार**

यह सच है कि स्त्री का आत्म संघर्ष रचना के संघर्ष पर विरत होता है। महिला साहित्यकार के लिए बाहरी संदर्भों में पहले उसका आन्तरिक समय होता है। जहाँ वह जीती है व साँस लेती है। दूसरी ओर होती है समय की चुनौतियाँ। उनके जीवन व सृजन के बीच अनवरत युद्ध की स्थिति बनी रहती है। उनकी राह में व्यवधान है। विचारक, विक्षेप, दुविधाएं एवं द्वन्द हैं। शिक्षित होने के साथ नारी ने यह भी जाना है कि वह नारी है और नारी होते हुए भी अपना समस्त स्त्रीत्व संजोकर उसे पुरुष के साथ खड़े होने का अधिकार है। क्योंकि वह सक्षम है। नारी को पुरुष बनकर पुरुष समकक्ष खड़ा नहीं होना है बल्कि पूरे शक्ति के रूप में उभरना है। महिलाओं में संवेदना का अतुलनीय खजाना होता है। नारी अपनी अनुभुतियों एवं संवेदनाओं में कलम के माध्यम से जब कागज की जमीन पर उकेरा तब उत्कृष्ट साहित्य सृजन कर सबको चकित कर दिया। पाठकों ने सराहना की तो साहित्य समीक्षक और लेखकों द्वारा नारी को साहित्यकारों की पंक्ति में बैठाना गवारा नही हुआ। महिला द्वारा हुई अभिव्यक्तियों को नकारने की कोशिश की गई। सामाजिक परम्पराओं को चुनौती देने की पथभ्रष्टता कहा गया किन्तु निडर महिला रचनाकारों ने अपनी साधना जारी रखी। स्त्री लेखन का मुद्दा तो एक रणक्षेत्र है पर लेखन के क्षेत्र में औरत पूरी समाज व्यवस्था है। महिलाओं की संवेदनशीलता अंतर्दृष्टि सबसे बढ़कर पीड़ा जो सदियों से उनके खाते में संचित होती आई है। रचनात्मक साहित्यिक सृजन में विशेष रुप से महिलाओं की निरन्तर वृद्धि हो रही है। जब स्त्री लिखती है तो एक जिम्मेदारी उठा रही है। एक लेखिका पहले माँ होती है फिर पत्नी और फिर रचनाकार। महिला लेखन की एक और सीमा है प्राय: घर और नौकरी के पश्चात शेष बचे समय की पार्ट टाइम लेखिका होती है। ओढ़ी हुई जिम्मेदारियों के कारण उसे ज्यादा पढ़ने लिखने का मौका नही मिलता है फिर भी ज्ञान, सोच और अनुभुतियों के आधार में तपकर जीवन्त रचनाएँ सामने ला रही हैं क्योंकि महिला लेखन में जीवन का अनुभव एवं व्यापक दृष्टि है। उसे अनदेखा नहीं किया जा सकता। आम भारतीय नारी के विषम जीवन को कठिनतर बनाती ये चुनौतियाँ अन्य कार्यक्षेत्रों में सक्रिय जागरुक महिलाओं की तुलना में सृजनात्मक लेखन को समर्पित लेखिकाओं की चुनौतियाँ अधिक हैं।

# ऊटी : यात्रा वृतांत

**श्री चार ओराम**
**सहायक लेखा अधिकारी**

हर ब्लॉक वर्ष की तरह हमने इस बार भी एल.टी.सी. पर जाने की ठान ली। जगह तय हुई - ऊटी। चुंकि हमने निश्चित कर लिया था अत: चार महीने पहले ही टिकट बुकिंग करवा लिया था। हमारे साथ साथी कर्मचारी रुद्र दमन ठाकुर जी, रमाकांत नायक जी एवं उनका परिवार कुल पंद्रह सदस्य थे।

हमारे टिकट एअर इंडिया फ्लाइट में हुए थे जिसमें हमें बैंगलूरु तक का सफर करना था। जैसे भुवनेश्वर - हैदराबाद - बैंगलूरु तक मेरी बेटी ने दिनांक 27/09/2017 को एअर पोर्ट तक ड्रॉप किया 10.00 बजे हमारी फ्लाईट थी कुल दो घंटे सफर तय करके हम हैदराबाद हवाई अड्डे पर उतरे, वहां कुछ खान-पान करने के बाद अगले के लिए निकल पड़े। जब बैंगलूरु में फ्लाइट उतरी तो शाम के 6.00 बज चुके थे। हमारे साथी रुद्र दमन ठाकुर जी का बेटा वहां खड़े इंतजार कर रहा था, उससे हमारी मुलाकात हुई। हवाई उड्डे पर हल्की बूंदा-बांदी बारिश हो रही थी।

हमने ओला से अपने निर्धारित होटल ऑक्टेव तक का सफर तय किया जो लगभग हवाई अड्डे से 38 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है जिसे माराथाली नाम से जाना जाता है। ओपोजिट जे.पी. मोरगान बोलने से बैंगलूरु के ज्यादातर आदमियों को पता है। हम रात गुजारने के बाद दिनांक 28/09/2017 को सुबह शांतिनगर बस अड्डे के लिए रवाना हो गए जहाँ कर्नाटक स्टेट रोड ट्रांसपोर्ट कार्पोरेश्न की वाल्वो बस से ऊटी का सफर करना था। रास्ते में मैसूर होते हुए दोपहर का भोजन हेतु रुकने के बाद गुडुलार से घाटी रास्ता आरंभ हो गया जो दिल्ली से शिमला जाते समय पड़ता है। रात के लगभग 9.00 बजे हम लोग ऊटी पहुंचे जहाँ हम होटल पैराडाईज में ठहरे।

दिनांक 29/09/2017 को हमारी टीम स्वराज माजदा गाड़ी से निकल पड़े साईट सीन के लिए पहले हमने थ्रेड गाईन की सैर की, फिर निकल पड़े कुनूर टी गार्डेन के लिए वहां बादल हमारे आसपास अपने धुंआ लिए नजरिया ला रहा था। हमने भरपूर लुत्फ उठाए और काफी मजा लिया बाद में भोजन करने के बाद अपने होटल के लिए वापस रवाना हो गए। रात गुजारने के बाद दिनांक 30/09/2017 को हाम ऊटी फिल्म शूटिंग प्वाइंट के लिए निकले जहां का नजारा कुछ देखते ही बनता था। कुछ घुड़सवारी भी हुई।

हमने दिनांक 01/10/2017 को वापस ऊटी से बैंगलूरु लौटने हेतु सुबह 10.00 बजे यात्रा की शुरुआत की चूंकि मौसम खराब था अत: बैंगलूरु पहुंचने में रात के 11.00 बज गए। हम होटल ऑक्टेव में ठहरकर भोजन किया। अगले दिन दिनांक 02/10/2017 को हमने बैंगलूरु मैट्रो में सैर करने हेतु उबेर में वैल्लौर मेट्रो स्टेशन से महालक्ष्मी स्टेशन गए। वहां इस्कॉन मंदिर दर्शन किए वापस लोकल में घूमे फिर 03/10/2017 को हमने फोनिक्स शॉपिंग मॉल की सैर एवं शॉपिंग किए। दिनांक 04/10/2017 को हम सुबह मैसूर के लिए रिजर्व बस में रवाना हुए।

मैसूर की विशेषता यह थी कि टीपू सुल्तान के राज्यकाल में निर्मित ऐतिहासिक स्थलों का भग्नावशेष तथा उनका मकबरा आदि तथा ब्रिटिशर्स के साथ कैसे लड़ाई में योगदान रहा तथा अंग्रेजों के साथ मिलकर उनकी हत्या कर दी गई यह गाईड ने बताया। रास्ते में पौराणिक विष्णु मंदिर के भी दर्शन हुए। उस दिन के सफर में सबसे ज्यादा यादगार मैसूर पैलेस था जिसे जिसकी जितनी भी तारिफ की जाए कम है। संगमरमर का बना भवन, राजकीय शासन के काल में अंकित कला व चित्र भव्य हैं। जाते-जाते अंग्रेजों द्वारा निर्मित शानदार संत फिलोमेनस भी देखा। हमारे गाईड ने यह भी बताया कि यहां बॉबी तथा अमर अकबर अंथोनी के साथ ही कई हिंदी फिल्मों की शूटिंग हुई है।

रास्ते में हमने मैसूर सिल्क साड़ी व प्रसिद्ध चंदन की शॉपिंग किए। अंतत: चामुण्डेश्वर मंदिर होते हुए वृंदावन गार्डन के लिए प्रस्थान किया। लगभग दो के दौरान हमने वाटर शो का लुत्फ उठाया। काफी आनंद आ रहा था। वृंदावन गार्डन छोड़ने के बाद हम करीब रात के 11.30 बजे बैंगलूरु लौट आए। दिनांक 05/10/2017 को हम उबेर लेकर कामर्शियल मार्केट के लिए निकल पड़े उस दिन जमकर बारिश हुई जिसने बैंगलूरु में रिकार्ड बनाया। रास्ते, गली और मोहल्ले पानी-पानी से भर गए थे।

दिनांक 06/10/2017 को हमारी फ्लाइट बैंगलूरु से मुंबई हेतु 6.45 बजे थी। हमने रात के 01.00 बजे ही चेक आउट कर लिए थे। फ्लाइट लगभग दो घंटे के सफर के बाद 8.45 बजे मुंबई हवाई अड्डे पर उतरी। वहां हमारी मुलाकात हमारे साथी कर्मचारी चित्तरंजन पात्र, के.पी.सेन, पुरूषोत्तम साहु एवं इन सभी के परिवार से हुई। ये सभी भी एल.टी.सी. पर गए थे। मुलाकात होने पर हमे बहुत आनंद आया। मुंबई से भुवनेश्वर एअर इंडिया फ्लाइटके लिए हमने इंतजार किया। अंतत: फ्लाइट में बोर्डिंग तथा करीब 01.00 बजे हम भुवनेश्वर पहुंच गए। यह सफर सदैव यादगार रहेगा।

# श्रद्धा-मार्ग

**श्री रबीन्द्र नाथ चांद**
**हिन्दी अधिकारी**

मन में जब तक है श्रद्धा तब तक
कोई न भटक सकेंगे सच्चाई के मार्ग से
दुख के क्षणों में भी मन को तसल्ली मिलेगी
सत्य और अहिंसा के मार्ग अपनाने से।

सत्य के पथ से पथभ्रष्ठ करने का
ना कभी प्रयास करना,
झूठ के सहारे निजी स्वार्थ के लिए
किसी के दिल को कभी ना दुखाना।

इंसान जब तक सत्य को अपनी वजूद
मान कर चलेंगे
तब तक हर कठिनाई से निर्विघ्न
आगे निकल जाएंगे।

झूठ के सहारे दूसरे को रूलाकर खुद तो
चंद पल के लिए
आनंद सागर में बह जाएंगे।

पर बाद में जिंदगी भर उस पश्चात्ताप की
आग में मन की पीढ़ा के
बोझ तले दब जाएंगे।

कभी शांत चित्त एकांत में बैठकर
जरा-जरा सा सोचकर देखना
अपने स्वार्थ प्रवृत्ति से जो सुख मिलता है,
औरों के सुख में सुखी होने से उससे
कहीं ज्यादा आनंद आता है।

मानव जीवन है सर्वोत्कृष्ट इसलिए
कि इसमें जितना अपना भला बुरा
सोचने की क्षमता है,
उतना ही औरों की भलाई सोचने का
अवसर मिलता है।

धन दौलत साथ लेकर न कोई आता है
और न ही कोई साथ लेकर जाता है।
बस दुनिया से सिर्फ चंद खुशियाँ
साथ लेकर जाएंगे,
साथी, सज्जन, बंधु, परिजनों का
आशीष और मंगल कामना जब साथ निभाएंगे।

श्रद्धा के साथ औरों की मंगल कामना कर
मन में थोड़ी सी जगह जरुर देना,
उसी में मिलेगी शांति और हर जाएगी
मन की सारी तड़प - वेदना।

# साथी

श्री सुकान्त कुमार महांती,
सहायक लेखा अधिकारी

ीवन में अनेक साथी मिलेंगे
कोई सुख में तो कोई दुख में
सुख के साथी होते हैं पल भर के लिए
पर दुख के साथी होते जनम-जनम के लिए।

जीवन पथ के हर मोड़ पर
सोच समझ कर आगे बढ़ना होगा
गलत साथी को पहचान कर
सच्चे साथी का हाथ थामना होगा।

दु:ख के क्षणों में मदद के हाथ जो बढ़ाएंगे
जीवन भर के लिए उन्हें
अपने दिल में बसा लेना
कड़वे हो भले उनके वचन
पर अपने दिल में चंद स्थान अवश्य देना।

पंच तत्वों से बना है यह शरीर
यहां कौन गरीब कौन अमीर,
सबको जाना होगा खाली हाथ
कोई न देगा अंतिम यात्रा में आपका साथ,
जब तक जिंदा रहेंगे
न छोड़ेंगे सच्चे साथी का हाथ।

# रिश्तों का महत्व

बीर किशोर जेना,
एमटीएस

एक रोज हम जुदा हो जाएंगे,
ना जाने कहाँ खो जाएंगें।
तुम लाख पुकारोगे हमको,
पर लौट के हम ना आएंगे।
थक हार के दिन के कामों से,
जब रात को सोने जाएंगे।
देखोगे जब तुम फोन को,
पैगाम मेरा ना पाओगे।

तब याद तुम्हें हम आएंगे,
इक रोज ये रिस्ता टुटेगा,
फिर कोई ना हमसे रुठेगा।
हम ना आँखे खोलेंगे,
तुमसे कभी ना बोलेंगे।
आखिर उस दिन रो दोगे,
तब दोस्त तुम मुझे खो दोगे।

# तन्हाई

(१)

सुश्री निधि गर्ग
अतिथि रचनाकार

ये रात का अन्धेरा, जाने क्यों डराता है,
तन्हाईयों का तम, जाने क्यों सताता है।

मेरी धड़कन सुन्न हुई,
मैं खुद में ही गुम हुई।

सब कुछ मरा-मरा सा है,
जीवन डरा-डरा सा है।

साँसे थमी-थमी सी हैं,
धड़कन रुकी-रुकी सी है।

कल तक दिन थी अब हूँ रात,
कोलाहल थी अब हूँ शांत।
कहने को मैं जिन्दा हूँ,
खयालों का बासिन्दा हूँ।

भूली जश्न जनाजा हूँ,
मैं बस इक अंदाजा हूँ।

कल तक पर्वत अब हूँ झील,
खुशियाँ वक्त गया है लील।

ये अकेलापन जीवन में सताता है,
ये रात का अंधेरा जाने क्यों डराता है।

# मेरा शिक्षक मेरा रक्षक

(२)

ओ पापा, मेरे पापा, प्यारे पापा।

तू ही मेरा रब, तू ही मेरी रुह,
तुझसे ही मैं और मुझमे ही तू।

तेरे संस्कारों से ढली,
तेरे बगियन की कली।

तू ही मेरी साधना,
तू ही मेरी प्रार्थना।

गीता भी तू, कुरान भी तू,
भजन भी तू, अजान भी तू।

तेरे हुनर की परछाई,
तेरे अरमानों की दुहाई।

तू ही मेरी जिन्दगी,
तू ही मेरी साँसे

दुनिया भी तू, मंदिर भी तू,
मेरा रुख भी तू, मेरा सुख भी तू।

तेरी मेहनत की कमाई,
तेरे जीवन में समाई।

तू ही मेरा रक्षक,
तू ही मेरा शिक्षक।

ज्ञान भी तू भगवान भी तू,
अभिमान भी तू, सम्मान भी तू।

तेरे पसीने की महक,
तेरे नैनों के अश्रु।

तू ही मेरा नामवरी,
तू ही मेरा जौहरी।

तराशा भी तुने, चमकाया भी तुने,
इस पत्थर को हीरा बनाया भी तुने।

तू ही मेरा रब, तू ही मेरी रुह,
तुझसे ही मैं और मुझमें है तू।

## पेड़

**श्री सरोज कुमार परिडा**
**वरिष्ठ लेखकार**

पेड़ तुम कितने महान हो
धूप और बरसात में
हर वक्त दूसरों की सेवा में लीन रहते हो
फूलों से लेकर फल तक,
पत्तियों से लेकर डालियाँ तक
करते हों पूर्ति इंसान की जरूरत
फिर भी इंसान इतना निर्दयी होकर
वक्त बेवक्त पर करते है
तुम पर वार बार-बार।

हमने न सही पर तरस तो आना चाहिए
तुम्हारी न सही अपनी जरुरत के लिए
पेड़ों को संहार से सुरक्षा करनी चाहिए।

इंसान को यह तो मालूम है
चाहे झोपड़ी हो या मकान आलीशान
तुम्हारे बिना नहीं संभव कोई निर्माण
फिर भी महत्व तुम्हारा न समझे ये जहान।

# भारत एक सच्चाई

श्री रवि कुमार,
डीईआ

हिंद-ए-वतन आँखों में लिए आँसुओं के बलिदान,
उन सरहदों पर कितने होंगे,
सिसकती आवाजें मेरी माँ की पूछती हैं उन सरकारों से,
पता नहीं और शहीद कितने होंगे ।।1।।
बदल रही हैं करवटें सरकारें अपनी ही रंजिशों में,
कराहती आवजें पूछती हैं चीखती दीवारों के उन सन्नाटों से,
रोती दामिनी और कितने होंगे ।।2।।
सियासतों के पन्ने फट जाते हैं एक सरबजीत के लिए,
ना जाने कुलभूषण और कितने होंगे ।।3।।
उजड़ गए कितनों के दामन अपने ही घरों में,
बिछड़ने लगे कितनों के आँखों के आँसू और जुबाँ कहने लगे,
ये तलाक और कितने होंगे ।।4।।
जला रखें हैं कितनों ने अपने ख्वाब तक उम्मीदों से,
ना जाने बेरोजगार और कितने होंगे ।।5।।
डर जाती हैं जब देखती हैं वो चेहरा अपना उन आईनों में,
खुद को कोसकर जिंदगी जीने के डर से दर-दर पूछती हैं,
जले चेहरे और कितने होंगे ।।6।।
पसारकर मैला आँचल पूछती हैं वो उन सियासी ठेकेदारों से,
कि भूख से मौतें और कितनी होंगे ।।7।।
दफन हो गए अब वो आँसू, आँखो के ही कब्र में,
झूल जाते हैं वो फंदों से कर्ज के बोझ तले फिर खेतन पूछती हैं,
बेबस किसान और कितने होंगे ।।8।।
दम तोड़ने लगी हैं अब लोगों की साँसें उन दामनों में,
बची साँसें पूछ रही हैं वादे और कितने होंगे ।।9।।

# आधुनिक मानव

कु. बबिता मणि
कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक

खुशियों से भरा हुआ है तो कभी चारो तरफ निराशा है,
मानव जीवन की हाय अजब देखो कैसी परिभाषा है।
जिसको देखो वही एक दूसरे की शिकायत करता है,
खुद से ही होकर दु:खी इधर-उधर भटकता है,
सारा जीवन उसका बस सोचते ही कट जाता है,
मानव जीवन की हाय अजब देखो कैसी परिभाषा है।

मानव तनिक सी बात पर भी समाज से रुठ जाता है,
अपनी गलतियों के लिए दूसरों को गलत ठहराता है,
जब तक उसे जीवन की सच्चाई का एहसास होता है,
तब तक बहुत विलंब हो जाता है,
मानव जीवन की हाय अजब देखो कैसी परिभाषा है।

बात-बात पर वह अपनों को ही आँख दिखाता है,
औरों को तुच्छ और खुद को सदा ही श्रेष्ठ बताता है,
जिस बात पर घमण्ड करता है,
उसकी सच्चाई वह खुद भी समझ नहीं पाता है,
मानव जीवन की हाय अजब देखो कैसी परिभाष है।

तू-तू, मैं-मैं करते-करते सारा जीवन कट जाता है,
माटी से बना हुआ ये खिलौना माटी में मिल जाता है।
फिर भी वो इस जीवन का महत्व समझ नहीं पाता है,
मानव जीवन की हाय अजब देखो कैसी परिभाषा है।।

# लड़कियाँ

**श्री संजीव दुबे,**
**डीईआ**

जाने क्यों झूठे इल्जाम ढोती हैं लड़कियाँ,
दुनियां में युँ ही बदनाम होती हैं लड़कियाँ।
हमेशा ही औरों की गुलाम होती हैं लड़कियाँ,
जिंदगी में घुट-घुटकर अपनी पहचान खोती हैं लड़कियाँ।।

जरा-जरा सी बात पे अरे ओ दुनियां वालों,
रुसवाँ क्यों सरेआम होती हैं लड़कियाँ।
कहते हैं हर कामयाबी के पीछे इनका हाथ है,
फिर भी हमेशा क्यों गुमनाम होती हैं लड़कियाँ।।

साहस का दूसरा नाम होती हैं लड़कियाँ,
जमाने का साथ मिले तो आसमान को भी छूती हैं लड़कियाँ।
ये न हो तो दुनियां कुछ भी नहीं,
खुदा का दुनियां को इनाम होती हैं लड़कियाँ।।

# प्रकृति

सुश्री पिंकी गुर्लिआ,
लिपिक

सुन्दर रुप इस धरती का
नीला आकाश आँचल जिसका
माँ की तरह हम पर प्यार है लुटाती
बिना माँगे हमें कितना कुछ देती जाती
ऊँचा मस्तक, पर्वत जिसका
उसके सर पे ताज,
चाँद सूरज की बिंदियों का
दिन में सूरज की रौशनी,
रात में शीतल सी चाँदनी
नदियों-झरनों से यौवन छलकता
सतरंगी पुष्प लताओं से श्रृंगार होता
भूमिगत जल से हमारी प्यास है बुझती
और बारिश में रिमझिम हवा है चलती
मुफ्त में ढेरों साधन उपलब्ध हमें है देती
कहीं रेगिस्तान तो कहीं बर्फ बिछा है
कहीं पर्वत खड़े तो कहीं जमीन है बंजर
कहीं फूलों की वादियाँ तो
कहीं हरियाली की चादर
खेत-खलिहानों में लहलहाती फसलें
बिखराती मंद-मंद मुस्कान, हाँ, यही तो हैं,
इस प्रकृति का स्वच्छ स्वरुप,
प्रफुल्लित जीवन का निष्छल सार
मानव इसका उपयोग करे इससे,
हसे कोई ऐतराज नहीं, लेकिन मानव इसकी
सीमाओं को तोड़े,
विकास की दौड़ में प्रकृति को,
यह इसको मंजूर नहीं
नजर अंदाज करना नहीं है बुद्धिमानी
क्योंकि सवाल है हमारे भविष्य का,
यह कोई न खेल है ना कहानी
मानव प्रकृति के अनुसार चले,
तो खुशियों की लहरें फूलें-फलें।

# नारी का त्याग

**सुश्री बासन्ती सामंतराय,**
**वरिष्ठ लेखाकार**

बेटी है बहन है बहु है वो कभी माँ तो कभी पत्नी है वो
फिर क्यों अपने को साबित करती है वो
लड़की है वो.....
सपनो की दुनिया में खोई सोती है वो
माँ बाबा के आँचल में छुपी रहती है वो
बेटी है वो.....
किसी और के लिए मन्नत माँगती है वो
अपने से ज्यादा दूसरों पर भरोसा करती है वो
बहन है वो.....
किसी की खुशी को अपनाकर सारे दर्द सह जाती है वो
सारे दर्द भुलाकार सशुराल को जन्नत बनाती है वो
बहु है वो.....
कोई न सुने फिर भी सलाह देती है वो
सबको खाना खिलाकार अपना पेट भरती है वो
माँ है वो.....
अपना घर नाम सपना छोड़कर किसी का घर नाम सपना अपनाती है वो
इंसान को ईश्वर बनाती है वो
पत्नी है वो.....
डरी सहमी सी सजती है वो, सबके चेहरे पर मुस्कान लाती है वो
बस एक ही सवाल दोहराती है वो
कौन है वो.....
अपना सब कुछ देकर सिर्फ सम्मान की आशा रखती है वो
नियति को अपनाकर फिर भी हर कदम पर अपने को साबित करती है वो
लड़की है वो.....

# पापा: आप हो सबसे खास

**सुश्री सस्मिता सोरेन,**
**लिपिक**

पापा कभी गले नहीं लगाते
कभी प्यार नहीं जताते
कभी पंसद नही पूझते
फिर भी.....
पसंद की हर चीज बिना कहे ही ला देते हैं..... जाने कैसे।
बात करना उन्हे पसंद नही,
चुप ही रहते हैं अक्सर....।
मन कि सारी बातें फिर भी,
जान जाते हैं मन से,
बिन कहे सब कह जाते हैं..... जाने कैसे।
पापा कुछ सख्त सी दुरियाँ रखते हैं हमारे साथ...
पर किसी और की सख्ती मंजूर नही उन्हे....
अपने इस प्रेम को सबसे छुपाते हैं.... जाने कैसे।
फर्क नही उन्हे हम दूर हों या पास या किसके साथ,
जबकि फर्क है उन्हे हम कहाँ और कैसे कहते नही, जताते भी नही.....
छुपाते हैं जज्बात..... जाने कैसे।
पापा का जीवन हूँ मैं और मेरा सब कुछ वो.....
न कभी खुद कहते हैं
न कभी कहने देते हैं
जब भी कहना चाहूँ बात बदल देते हैं..... जाने कैसे।
पर आज कहती हूँ न रोक सकेगें आप....
मेरी आवाज..... मेरे जज्बात
मेरे पापा आप हो सबसे खास....।.

# विविधा

## कार्यालय समाचार

## (अवधि अगस्त 2017 से जनवरी 2018)

### पदोन्नतियाँ

### सहायक लेखा अधिकारी से लेखा अधिकारी

| क्रमांक | नाम | तिथि |
|---|---|---|
| 1 | श्री बसन्त कुमार परिडा | 01.08.2017 |
| 2 | श्री हरयक्ष केशरी वर्मा | 01.08.2017 |
| 3 | श्री मनोरंजन पाणिग्रही | 18.08.2017 |
| 4 | श्री प्रबीर कुमार सामल | 03.10.2017 |
| 5 | श्री पबित्र मोहन स्वाईं | 30.11.2017 |
| 6 | श्री प्रसन्न कुमार बेहेरा | 10.10.2017 |
| 7 | श्री पीतांबर साहू | 30.11.2017 |
| 8 | श्री पी चिट्टीबाबू | 01.12.2017 |
| 9 | श्री बिद्याधर मलिक | 01.12.2017 |

### सहायक लेखा अधिकारी (आरटी) से सहायक लेखा अधिकारी

| क्रमांक | नाम | तिथि |
|---|---|---|
| 1 | श्री कैलाश चन्द्र राउत | 01.08.2017 |
| 2 | श्री कैलाश चन्द्र पंडा | 01.08.2017 |
| 3 | श्री वी आनन्द भट्ट | 01.08.2017 |
| 4 | श्री सिमांचल गौड़ | 18.08.2017 |
| 5 | श्री अशोक कुमार मिश्र | 23.08.2017 |
| 6 | श्री अनिल कुमार पटेल | 01.09.2017 |
| 7 | श्री गोपबन्धू नायक | 03.10.2017 |
| 8 | श्री फकीर चन्द्र पात्र | 03.10.2017 |
| 9 | श्री तपन कुमार जेना | 03.10.2017 |
| 10 | श्री नटबर दास | 10.10.2017 |
| 11 | श्री बिजय कुमार नायक | 01.12.2017 |

## वरिष्ठ लेखाकार से पर्यवेक्षक

| क्रमांक | नाम | तिथि |
|---|---|---|
| 1 | श्री एस के जफरूद्दीन | 18.01.2018 |

**पदोन्नत सभी अधिकारी/कर्मचारियों को वातायन परिवार का हार्दिक अभिनंदन।**

## नियुक्तियाँ

| क्रमांक | नाम एवं पदनाम | तिथि |
|---|---|---|
| 1 | श्री सुवेन्दू कुमार दलाई, लिपिक | 03.08.2017 |
| 2 | श्री आनन्द क्रिस्टोदास लाक्रा, लिपिक | 22.08.2017 |
| 3 | श्री प्रसन्न टिर्की, लिपिक | 16.10.2017 |
| 4 | श्री टियोफिल कुजुर, लिपिक | 16.10.2017 |
| 5 | श्री तिकेड कुजुर, लिपिक | 16.10.2017 |
| 6 | श्री सतीश यादव | 16.10.2017 |
| 7 | श्री तनमय मल्लिक, लिपिक | 16.10.2017 |

**नवनियुक्त सभी कर्मचारियों को वातायन परिवार इस कार्यालय में हार्दिक स्वागत करता है।**

## सेवानिवृत्ति/स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति

| क्रमांक | नाम एवं पदनाम | तिथि |
|---|---|---|
| 1 | श्री बालून्की पृस्टी, वरिष्ठ लेखाकार (पुरी कार्यालय) | 31.08.2017 |
| 2 | श्री रबीन्द्र कुमार सामल, स.ले.अ. | 31.08.2017 |
| 3 | श्री बिद्याधर हेमब्रम, स.ले.अ. | 30.09.2017 |
| 4 | श्री सुरेश चन्द्र नन्द, वरिष्ठ लेखा अधिकारी | 30.09.2017 |
| 5 | श्री मधुसूदन नायक, स.ले.अ. | 30.09.2017 |
| 6 | श्री प्रसन्न कुमार सड़ंगी, वरिष्ठ लेखाकार | 30.09.2017 |
| 7 | श्री प्रदीप कुमार बलियार सिंह, वरिष्ठ लेखाकार | 30.09.2017 |
| 8 | श्री एन सेशाद्री, वरिष्ठ लेखा अधिकारी (स्वैच्छिक) | 17.08.2017 |
| 9 | श्री श्रीकान्त पटनायक, वरि. लेखाकार (पुरी कार्यालय) | 30.09.2017 |
| 10 | श्री पूर्ण चन्द्र दास, वरिष्ठ लेखा अधिकारी (स्वैच्छिक) | 31.10.2017 |
| 11 | श्री कुशान चन्द राउतराय, लेखा अधिकारी | 31.10.2017 |
| 12 | श्री बिक्रम कुमार नाथ, वरिष्ठ लेखाकार | 31.10.2017 |

| | | |
|---|---|---|
| 13 | श्री बिरेन्द्र कुमार खुन्टिया, स.ले.अ. (पुरी कार्यालय) | 30.11.2017 |
| 14 | श्री श्रीबास कुमार महापात्र, वरिष्ठ लेखा अधिकारी | 30.11.2017 |
| 15 | श्री राज किशोर साहू, स.ले.अ. | 30.11.2017 |
| 16 | श्री बिलास चन्द्र बेहरा, वरिष्ठ लेखाकार | 30.11.2017 |
| 17 | श्रीमती एस वी पदमावती, वरिष्ठ लेखाकार | 31.12.2017 |
| 18 | श्री सनत कुमार रथ, वरिष्ठ लेखाकार | 31.12.2017 |
| 19 | श्री अभिराम मलिक, वरिष्ठ लेखाकार | 31.12.2017 |
| 20 | श्री चन्द्र मोहन हंस्दा, स.ले.अ. | 31.01.2018 |
| 21 | श्री भोलानाथ मिश्र, स.ले.अ. (पुरी कार्यालय) | 31.01.2018 |
| 22 | श्री सिद्धार्थ रथ, वरिष्ठ लेखाकार | 31.01.2018 |
| 23 | श्री दोलगोविन्द जेना, वरिष्ठ लेखाकार | 31.01.2018 |
| 24 | श्री सुनील कुमार मंडल, वरिष्ठ लेखाकार | 31.01.2018 |
| 25 | श्री रघुनाथ माली, वरिष्ठ लेखाकार | 31.01.2018 |
| 26 | श्री दु:खीश्याम साहू, वरिष्ठ लेखाकार | 31.01.2018 |

इस कार्यलय में सत्य, निष्ठा और ईमानदारी के साथ लंबे सेवाकाल के बाद सेवानिवृत्त हुए सभी अधिकारी और साथी कर्मचारियों के प्रति वातायन परिवार का श्रद्धापूर्वक नमन। सेवापोरांत आगे की दीर्घायु की कामना करते हुए ईश्वर से सबके लिए कुशल स्वास्थ्य तथा मंगलमय जीवन की कामना करता है।

## साथी जो बिछड़ गये

| क्रमांक | नाम एवं पदनाम | तिथि |
|---|---|---|
| 1 | श्री पबीत्र मोहन मोहन्ती, लेखा अधिकारी | 06.10.2017 |
| 2 | श्री बरुन राय, एमटीएस | 27.11.2017 |

बिछड़े हुए साथियों के लिए ईश्वर से प्रार्थना है कि उनकी आत्मा को परम सद्गित प्राप्त हो एवं उनके परिवारजनों को इस दुखद परिस्थिति से उबरने की शक्ति दें।

## राजभाषा गतिविधियाँ

## हिंदी दिवस एवं हिंदी पखवाड़ा समारोह का आयोजन

वर्ष 2017 का हिंदी दिवस एवं हिंदी पखवाड़ा समारोह प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हक) ओडिशा, भुवनेश्वर कार्यालय में दिनांक 08 सितंबर से 22 सितंबर 2017 तक प्रधान महालेखाकार (आ.एवं रा.क्षे.लेप.), महालेखाकार (सा.एवं सा.क्षे.लेप.) तथा उपनिदेशक (सीआरए) कार्यालयों के साथ संयुक्त रुप से धूमधाम से मानाया गया। 14 सितंबर हिंदी दिवस के अवसर पर विभिन्न प्रतियोगिताओं के साथ कार्यालयीन गृह पत्रिका "वातायन" के 94 वें अंक का विमोचन प्रधान महलेखाकार महोदया द्वारा किया गया। पखवाड़ा के उपलक्ष्य में विभिन्न प्रतियोगिताओं का योजन किया गया जिनके परिणाम निम्नानुसार हैं :-

| वाद-विवाद | | |
|---|---|---|
| **अधिकारी वर्ग** | **कर्मचारी (अहिंदी वर्ग)** | **कर्मचारी (हिंदी वर्ग)** |
| प्रथम : बी बी सामंतराय | प्रथम : भारती महापात्र | प्रथम : रवि कुमार |
| द्वितीय : मनोरंजन पाणिग्राही | द्वितीय : पातस कुमार दाश | द्वितीय : रमेश कुमार |
| तृतीय : भाग्यवती दलाई | तृतीय : शांतिलता सेठी | तृतीय : दीपक यादव |
| **श्रुत लेखन** | | |
| **अधिकारी वर्ग** | **कर्मचारी (अहिंदी वर्ग)** | **कर्मचारी (हिंदी वर्ग)** |
| प्रथम : चार ओराम | प्रथम : पिंकी गुर्लिआ | प्रथम : आलोक कुमार |
| द्वितीय : मनोरंजन पाणिग्राही | द्वितीय : अशोक कुमार देहुरी | द्वितीय : बिंचु कुमार |
| तृतीय : एस.के सामंतराय | तृतीय : एस वी पद्मावती | तृतीय : रमेश यादव |
| **टिप्पणी और मसौदा लेखन** | | |
| **अधिकारी वर्ग** | **कर्मचारी (अहिंदी वर्ग)** | **कर्मचारी (हिंदी वर्ग)** |
| प्रथम : सुकांत कुमार महांति | प्रथम : प्रेमानंद मेहेर | प्रथम : रमेश यादव |
| द्वितीय : भाग्यवती दलाई | द्वितीय : अम्बिका चरण पात्र | द्वितीय : रोहित कुमार |
| तृतीय : मनोरंजन पाणिग्राही | तृतीय : पिंकी गुर्लिआ | तृतीय : निवेदिता |

### कार्यशालाओं एवं राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठकों का आयोजन

दिनांक 31 दिसंबर 2017 को समाप्त तिमाही के लिए इस कार्यालय में निम्नानुसार कार्यशालाओं एवं राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठकों का आयोजन किया गया:-

| **कार्यशालाएं** | **27 एवं सितंबर 2017** | **11 एवं दिसंबर 2017** |
|---|---|---|
| कार्यालयीन राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठकें | 17 अक्टूबर 2017 | 11 जनवरी 2018 |

## कल्याण अनुभाग की गतिविधियाँ

### 1. खेलकूद गतिविधियाँ :-

(क) कैरम - भारतीय लेखा एवं लेखा परीक्षा विभाग (पूर्व क्षेत्र) के कैरम टुर्नामेन्ट का आयोजन दिनांक 09.08.2017 से 11.08.2017 तक कार्यालय परिसर में हुआ।

| टीम | | पुरुष एकल | | |
|---|---|---|---|---|
| प्रथम | प्रधान महालेखाकार, ओड़िशा, भुवनेश्वर। | प्रथम | रणबीर मलिक | महालेखाकार पश्चिम बंगाल, "बा" |
| द्वितीय | महालेखाकार, बिहार, पटना | द्वितीय | आदर्श कुमार गुप्ता | महालेखाकार, झारखण्ड |
| | | तृतीय | एस पी महान्ती | प्रधान महालेखाकार ओड़िशा |
| | | चतुर्थ | राजेश साहू | प्रधान महालेखाकार ओड़िशा |

| महिला एकल | | | वेटरन (पुरुष) | | |
|---|---|---|---|---|---|
| प्रथम पश्चिम | रिंकी रंजन | महालेखाकार, झारखण्ड | प्रथम | अबुल हसनत | महालेखाकार, पश्चिम बंगाल, "ए" |
| द्वितीय पश्चिम | कविथा रानी | महालेखाकार, बिहार | द्वितीय | पार्थी बनर्जी | महालेखाकार, पश्चिम बंगाल, "बी" |

(ख) हॉकी - भारतीय लेखा एवं लेखा परीक्षा विभाग (पूर्व क्षेत्र) के हॉकी टुर्नामेन्ट का आयोजन कलिंगा स्टेडियम, भुवनेश्वर में दिनांक 18.01.2018 से 19.01.2018 तक हुआ।

| विजेता टीम | उप विजेता टीम |
|---|---|
| प्रधान महालेखाकार, ओड़िशा | महालेखाकार, पश्चिम बंगाल |

भारतीय लेखा एवं लेखापरीक्षा विभाग का अंतर्क्षेत्रीय हॉकी टूर्नामेंट 2017-2018 का आयोजन हुआ था जिसमें प्रधान महालेखाकार, ओड़िशा विजेता रहा।

## भारतीय लेखा एवं लेखापरीक्षा विभाग का अंतर्क्षेत्रीय हॉकी टूर्नामेंट

## 2017-2018 के चैम्पियन

| | |
|---|---|
| अभय कुमार सामन्तराय (कप्तान) | वीरेन्द्र यादव |
| अमल पाल | प्रशांत तिर्की |
| अयजुब केरकेटा | सतीश यादव |
| मनीष कुमार शर्मा | टियोफिल कुजूर |
| एन जितेन सिंह | टिकेई कुजूर |
| फिलमेन टेटे | अशित कुमार लाकरा |
| राहुल यादव | अजय कुमार साहनी |
| रजत कुमार खेस | राजेश्वर इक्का |
| सरोज कुमार टोप्पो | राजेश डुंगडुंग (प्रशिक्षक) |
| तेज कुमार तिर्की | तापस कुमार दास (प्रबंधक) |

परिणाम- क्वार्टर फाईनल- प्रधान महालेखाकार, ओड़िशा-5 महालेखाकार हैदराबाद-3

सेमी फाईनल- प्रधान महालेखाकर, ओड़िशा-2 महालेखाकार राजस्थान-

1. फाईनल- प्रधान महालेखाकार, ओड़िशा-3 महालेखाकार हरियाणा-2

2. अन्य गतिविधि :- प्रधान महालेखाकार (लेखा.एवं हक.) का कार्यालय में लॉरेंस एवं मेयो द्वारा दिनांक 14.11.17 से 15.11.17 तक नेत्र जाँच कार्यक्रम का आयोजन हुआ। प्रतियोगिताओं के विजेता टीम/खिलाड़ियो को वातायन परिवार की ओर से हार्दिक अभिनन्दन।

## कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) - प्रथम, उत्तर प्रदेश, इलाहाबाद।

आपके द्वारा प्रेषित हिंन्दी पत्रिका "वातायन" के 93 वें अंक की एक प्रति प्राप्त हुई। पत्रिका का मुद्रण एवं प्रकाशन उत्तम है। संकलित समस्त लेख एवं रचनायें सरस एवं पठनीय है। सुश्री भाग्यवती दलाई का लेख प्रदूषर: रुठता जा रहा है बसन्त, श्री रंकरतन स्वई का 'धर्म, कर्म और संगत की आवश्यकता', रबीन्द्र नाथ चाँद की कविता 'राह कोई मुझे शान्ति की बता दे' एवं श्री राजेश कुमार कटरे की 'हिंन्दी और मैं उत्कृष्ट हैं।

पत्रिका के कुशल संपादन हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीय

वरिष्ठ लेखाधिकारी/हिंन्दी

## कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) - प्रथम, उत्तर प्रदेश, इलाहाबाद।

आपके द्वारा प्रेषित हिंन्दी पत्रिका "वातायन" के 94 वें अंक की प्रति प्राप्त हुई। पत्रिका का आवरण पृष्ठ अत्यन्त आकर्षक है तथा मुद्रण एवं प्रकाशन उत्तम है। संकलित समस्त लेख एवं रचनायें सरस एवं पठनीय है। श्री चार ओराम का लेख 'ओडिशा का गोरव, श्री सुन्दर लाल साव का 'हिन्दी राष्ट्रभाषा के रुप में, श्री बिजय कुमार साहु की 'बचपन और बारिश' तथा श्री संजीव कुमार दुबे की 'बेटियाँ' प्रशंसनीय हैं।

पत्रिका के कुशल संपादन हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीय

वरिष्ठ लेखाधिकारी हिंन्दी

## कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) - चण्डीगड़

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंन्दी पत्रिका "वातायन" का 93 वां अंक प्राप्त हुआ। पत्रिका की संपूर्ण सामग्री प्रशंसनीय है। भाग्यवती दलाई का लेख 'प्रदूषण: रूठता जा रहा है बसंत' बड़ा ही ज्ञानवर्धक व विचारोत्ते जक हैं। रमेश यादव की बारिश और आँसू', रबीन्द्र नाथ चाँद की 'राह कोई मुझे शांति की बता दे, अभिषेक कुमार की 'बचपन' रचनाएं भी सराहनीय हैं। पत्रिका का आवरण पृष्ठ भी आकर्षक है। ग क्षेत्र में होने के बावजूद भी जो प्रयास किया गया है, वास्तव में प्रशंसनीय है।

पत्रिका के सभी रचनाकारों एंव संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एंव पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगाति के लिए शुभकामनाएं।

भवदीय

स.लेखा अंधिकारी (हिंन्दी कक्ष)

## भारत सरकार भारतीय लेखापरीक्षा विभाग प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) - हिमाचल प्रदेश, शिमला

आपके कार्यालय के पत्र संठ हिठप्रठ/पत्रिका/152 दिनांक 27.09.2017 द्वारा प्रेषित हिन्दी पत्रिका "वातायन" के 94 वें अंक की प्रति प्राप्त हुई। धन्यवाद। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनायें उत्कृष्ट, पठनीय एवं ज्ञानवर्धक हैं। "कार्यालय आँटोमेशन प्रणाली", "जैसी करनी वैसी भरनी", "नारी और नौकरी", "सकारात्मक सोच", "बचपन की बारिश" और "आपका अनमोल उपहार" विशेष रुप से प्रशंसनीय हैं। रचनाकारों एवं पत्रिका के कुशल सम्पादक मण्डल को हार्दिक बधाई।

भवदीय

लेखापरीक्षा अंधिकारी हिन्दी कक्ष

## भारतीय लेखापरीक्षा तथा कार्यालय प्रधान निदेशक वाणिज्यक लिखापरीक्षा तथा पदेन सदस्य, लेखापरीक्षा बोर्ड-।, मोंबाइविभाग प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) हिमाचल प्रदेश, शिमला

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी पत्रिका "वातायन" के चौरानवे अंक की प्राप्ति हुइ। पूरी पत्रिका मनोयोग से पढ़ी। पत्रिका भेजने के लिए धन्यवाद।

इस पत्रिका में संकलित सभी रचनायें ज्ञानवर्धक एवं एक से बढ़कर एक हैं। इन रचनाओं में से कुछ रचनायें अत्यंत रुचिकर हैं जिनमें से 'समय का महत्व', 'भाग्य या मेहनत', 'सकारात्मक सोच' एवं 'बेटियाँ' प्रमुख हैं। अन्य लेख भी सूचनापरक एवं बहुत ही आकर्षक हैं। भविष्य में भी ऐसी रचनाओं की प्रतीक्षा रहेगी।

पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए हमारी शुभकामनायें स्वीकार करें।

भवदीय

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (प्रशासन)

## भारतीय लेखापरीक्षा और लिखा विभाग कार्यालय महालेखाकार (लेखा ब हक) - राजस्थान

आपके कार्यालय की हिन्दी गृह पत्रिका "वातायन" के 94 वें अंक की प्रति प्राप्त हुई, धन्यवाद। पत्रिका में संकलित समस्त रचनायें रोचक एवं ज्ञानवर्धक है। पत्रिका को प्रभावी बनाने तथा पाठकों में हिंन्दी के प्रति रुचि जाग्रत करने हेतु आपका यह प्रयास अत्यंत सराहनीय है।

श्रीमती शांतिलता सेठी की रचना जेसी करनी वैसी भरती, कुमारी बबिता मणि का लेख 'समय का महत्व', श्री संजीव कुमार दुबे की रचना बिटियां, श्री आलोक कुमार की रचना 'शिक्षा' एवं श्री रमेश यादव की रचना 'मुझे आज भी याद है' बहुत ही प्रशंसनीय है।

पत्रिका के सफल सम्पादन हेतु सम्पादक मण्डल को बधाई व पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति एवं उज्जवल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

15-1-18

भवदीया

हिंन्दी अधिकारी/राजभाषा कक्ष

## महालेखाकार (लेखापरीक्षा)-।। महाराष्ट्र, नागपुर

आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका "वातायन" के 94 वें अंक की प्रति प्राप्त हुई, सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका में समाविष्ट सभी लेख, कविताएं, उत्कृष्ट एवं ज्ञानवर्धक है। पत्रिका का यह अंक भी अन्य अंको की तरह बेहतर है। सर्वप्रथम आपके कार्यालय द्वारा राजभाषा के व्यापक प्रचार-प्रसार के लिए प्रकाशित की जा रही छमाही राजभाषा पत्रिका "वातायन" को न.रा.का.स भुवनेश्वर (के) द्वारा सर्वश्रेष्ठ पत्रिका चुने जाने पर बहुत-बहुत बधाई। पत्रिका में दी हुई हिंदी गतिविधियों की झलिकयों से स्पष्ट होता है कि आपका कार्यालय राजभाषा के प्रति कितना जागरुक है तथा निरंतर इसको प्रगति के पथ पर गतिमान बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है, जो कि सराहनीय है। पत्रिका में सभी रचनाकारों ने अपने विषयों के अनुकूल रचना का बहुत ही सुंदर तरीके से वर्णन किया है। इसके लिए सभी रचनाकार बधाई के पात्र है। पत्रिका की साज सज्जा उत्तम है तथा भविष्य में पत्रिका के भीतर के रंगीन पृष्ठों के साथ पत्रिका के अगले अंक के और भी निखरकर आने की संभावनाए व्याप्त है। कार्यालयीन चित्रों ने पत्रिका की सुंदरता और निखारा है। पत्रिका के मुख पृष्ठ पर दिया गया मंदिर का चित्र बहुत ही सुंदर है तथा पत्रिका के प्रति पाठक का ध्यान आकर्षित करता है।

पत्रिका के कुशल तथा सफल संपादन हेतु संपादक मंडल को हार्दिक बधाई। पत्रिका के निरंतर उज्ज्वल भविष्य हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय
व.ले.प.अ/हिन्दी अनुभाग

## कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा) छ.ग. रायपुर जिरो प्वाईट, पोस्ट मांढर

उपरोक्त संदार्भित पत्र के साथ आपके कार्यालय द्वार प्रकाशित हिन्दी पत्रिका "वातायन" के 94 वें अंक की एक प्रति प्राप्त हुई। इस पत्रिका की सभी रचनाएँ उत्कृष्ठ व ज्ञानवर्धक हैं।

हिन्दी भाषा के सृजनशीलता के उत्थान हेतु आपका यह प्रयास सराहनीय हैं, इसके लिए आप सभी बधाई के पात्र हैं।

शुभकामनाओं सहित।

भवदीय
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
हिन्दी कक्ष

## महालेखाकार (लेखापरीक्षा)-।। महाराष्ट्र, नागपुर

पत्रिका "वातायन" का सम्पूर्ण कलेवर प्रभावशाली है। पत्रिका में सम्मिलित सभी रचनाएँ उत्कृष्ट एवं ज्ञानवर्धक हैं। श्री रबीन्द्र नाथ चाँद की "राष्ट्रीय एकता और हिन्दी", श्रीमती शांतिलता सेठी की "जैसी करनी वैसी भरनी", कुमारी बबीता मणि की "समय का महत्व", श्री संजीव कुमार दुबे की "बेटियाँ", श्री आलोक कुमार की "शिक्षा" एवं श्री विष्णु प्रसन्न दाश की "मैं बलवान हूँ" आदि रचनाऐं विशेष रुप से सराहनीय हैं।

पत्रिका की उतरोतर प्रगति के लिए अनेक शुभकामनाओं सहित।

भवदीय
वरिष्ठ लेखा अधिकारी